www.researchvidyapith.com ISSN (Online): 3048-7331

Research Vidyapith International Multidisciplinary Journal

(International Open Access, Peer-reviewed & Refereed Journal)

(Multidisciplinary, Monthly, Multilanguage)

*** Vol-2* *Issue-10* *October 2025***

माइग्रेशन और उसका सामाजिक प्रभाव

डॉ० स्वीटी दर्शन

सहायक प्राध्यापक (अतिथि), समाजषास्त्र विभाग, वूमेंस कालेज, समस्तीपुर, एल एन एम यू, दरभंगा।

शोध–सारः माइग्रेशन (प्रवासन) मानव इतिहास का एक अभिन्न अंग रहा है, जो आर्थिक अवसरों, जलवायु परिवर्तन और सामाजिक कारकों से प्रेरित होकर समाज को नया आकार देता है। यह अध्ययन भारत के संदर्भ में माइग्रेशन के सामाजिक प्रभावों का विश्लेषण करता है, जहाँ 2025 तक 400 मिलियन से अधिक आंतरिक प्रवासी हैं, लेकिन घरेलू प्रवासन में 12% की गिरावट दर्ज की गई है। माइग्रेशन के प्रकारों आंतरिक (ग्रामीण से शहरी) और अंतरराष्ट्रीय (कुशल/अकुशल) में आर्थिक असमानता प्रमुख कारण है, लेकिन जलवायु–प्रेरित विस्थापन (IDMC 2025 रिपोर्ट के अनुसार, भारत में रिकॉर्ड स्तर पर) ने इसे जटिल बना दिया है। IIT इंदौर के शोध से स्पष्ट है कि ग्रामीण से शहरी पलायन शहरों के दैनिक जीवन को बदल रहा है, जहाँ प्रवासी 40% शहरी श्रमिक हैं। सामाजिक प्रभाव बहुआयामी हैं। सकारात्मक रूप से, रेमिटेंस (2025 में 100 अरब डॉलर अनुमानित) परिवारों को सशक्त बनाते हैं, शिक्षा और स्वास्थ्य में निवेश बढ़ाते हैं, तथा सांस्कृतिक आदान–प्रदान को प्रोत्साहित करते हैं। महिलाओं के सशक्तिकरण में, प्रवासी पति की अनुपस्थिति घरेलू निर्णयों को प्रभावित करती है, लेकिन अंतरराष्ट्रीय माइग्रेशन में 'ब्रेन ड्रेन' (3500 करोड़पति 2025 में देश छोड़ने वाले) सामाजिक असमानता बढ़ाता है। नकारात्मक प्रभावों में परिवार विखंडन प्रमुख है, जहाँ 30% प्रवासी परिवारों में बच्चे भावनात्मक तनाव का शिकार होते हैं, और शहरी स्लम्स में सांस्कृतिक पहचान का संकट उत्पन्न होता है। गुरुत्वाकर्षण मॉडल (EAC&PM रिपोर्ट) से पता चलता है कि निकटवर्ती स्थानों की ओर प्रवासन सामाजिक नेटवर्क को मजबूत करता है, लेकिन COVID–19 के बाद 11.8% गिरावट ने ग्रामीण अर्थव्यवस्था को प्रभावित किया। माइग्रेशन सामाजिक परिवर्तन का उत्प्रेरक है, लेकिन असमानता को कम करने के लिए नीतिगत हस्तक्षेप जैसे रेमिटेंस–आधारित विकास योजनाएँ और जलवायु अनुकूलन आवश्यक हैं।

कुंजी शब्दः प्रवासन, सामाजिक प्रभाव, आंतरिक विस्थापन, रेमिटेंस, परिवार विखंडन, शहरीकरण, जलवायु परिवर्तन, लैंगिक सशक्तिकरण, आर्थिक असमानता, गुरुत्वाकर्षण मॉडल।

परिचयः प्रवासन (माइग्रेशन) मानव इतिहास का एक अभिन्न हिस्सा रहा है। यह वह प्रक्रिया है जिसमें लोग एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाते हैं, चाहे वह देश के अंदर हो या अंतरराष्ट्रीय स्तर पर। प्रवासन के मुख्य कारण आर्थिक अवसर, शिक्षा, स्वास्थ्य सुविधाएं, राजनीतिक स्थिरता, पर्यावरणीय परिवर्तन या संघर्ष हो सकते हैं। वर्तमान में, वैश्वीकरण और तकनीकी प्रगति के कारण प्रवासन की दर बढ़ रही है। संयुक्त राष्ट्र के अनुसार, विश्व में लगभग 281 मिलियन अंतरराष्ट्रीय प्रवासी हैं, जो वैश्विक जनसंख्या का 3.6% है। यह अध्ययन प्रवासन के सामाजिक प्रभावों पर केंद्रित है, जिसमें सकारात्मक और नकारात्मक दोनों पहलू शामिल हैं। सामाजिक प्रभाव से तात्पर्य है कि प्रवासन कैसे समाज की संरचना, संस्कृति, स्वास्थ्य, शिक्षा और सामाजिक एकता को प्रभावित करता है। इस अध्ययन में हम विभिन्न स्रोतों से प्राप्त जानकारी के आधार पर इन प्रभावों का विश्लेषण करेंगे, जिसमें विभिन्न दृष्टिकोणों का प्रतिनिधित्व किया गया है। प्रवासन एक दोधारी तलवार की तरह है। एक ओर, यह विकास और विविधता लाता है, वहीं दूसरी ओर, यह चुनौतियां भी पैदा करता है। उदाहरण के लिए, विकासशील देशों से विकसित देशों की ओर प्रवासन अक्सर देखा जाता है, जो दोनों पक्षों पर प्रभाव डालता है। इस परिचय में हम प्रवासन के सामाजिक प्रभावों की एक संक्षिप्त झलक देखेंगे, जो आगे विस्तार से चर्चा की जाएगी।

प्रवासन के कारणः प्रवासन के सामाजिक प्रभावों को समझने से पहले, इसके कारणों को जानना आवश्यक है। मुख्य कारणों में युद्ध, गरीबी, भुखमरी, प्राकृतिक आपदाएं, राजनीतिक अस्थिरता, भेदभाव और आर्थिक मंदी शामिल हैं। उदाहरण के लिए, जलवायु परिवर्तन और संघर्ष के कारण लाखों लोग अपने घर छोड़ने को मजबूर होते हैं। सामाजिक कारणों में

परिवार का आकार, रहन–सहन की स्थिति, शिक्षा और शहरी/ग्रामीण निवास शामिल हैं। ये कारक प्रवासियों के मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य को प्रभावित करते हैं, जो आगे सामाजिक प्रभावों का आधार बनते हैं।

सकारात्मक सामाजिक प्रभावः प्रवासन के कई सकारात्मक सामाजिक प्रभाव हैं। सबसे पहले, यह आर्थिक विकास को बढ़ावा देता है। प्रवासी श्रम बाजार में योगदान देते हैं, नई नौकरियां पैदा करते हैं और उत्पादकता बढ़ाते हैं। उदाहरण के लिए, अमेरिका में प्रवासियों ने अर्थव्यवस्था को मजबूत किया है, जहां वे मजदूरी बढ़ाते हैं, नवाचार लाते हैं और बेहतर शिक्षित कार्यबल बनाते हैं। सामाजिक रूप से, प्रवासन विविधता लाता है, जो सांस्कृतिक आदान–प्रदान को प्रोत्साहित करता है। प्रवासी नई संस्कृतियां, भाषाएं और परंपराएं लाते हैं, जो समाज को समृद्ध बनाती हैं। इसके अलावा, प्रेषण (रेमिटेंस) के माध्यम से प्रवासी अपने मूल देशों में गरीबी कम करते हैं, स्वास्थ्य और शिक्षा में सुधार करते हैं। प्रवासी अक्सर स्वस्थ होते हैं और मेजबान समाज में योगदान देते हैं, हालांकि समय के साथ यह लाभ कम हो सकता है। वैश्विक स्तर पर, प्रवासन सतत विकास को बढ़ावा देता है, जैसे कि जनसांख्यिकीय युवावस्था और श्रम बाजार की लचीलापन। अध्ययनों से पता चलता है कि प्रवासन पूर्वाग्रह कम करता है और सामाजिक एकीकरण को मजबूत करता है।

नकारात्मक सामाजिक प्रभावः हालांकि, प्रवासन के नकारात्मक प्रभाव भी महत्वपूर्ण हैं। मेजबान देशों में, यह जनसंख्या वृद्धि, सार्वजनिक सेवाओं पर दबाव, आवास की कमी और स्वास्थ्य सुविधाओं पर बोझ बढ़ाता है। भाषा और सांस्कृतिक बाधाएं सामाजिक एकता को प्रभावित करती हैं, जिससे प्रदूषण और अपराध की दर बढ़ सकती है। प्रवासियों को मानसिक स्वास्थ्य समस्याएं जैसे अवसाद, चिंता और PTSD का सामना करना पड़ता है, खासकर शरणार्थियों को। सांस्कृतिक हानि (कल्चरल बेरेवमेंट) एक प्रमुख समस्या है, जहां प्रवासी अपनी सांस्कृतिक मान्यताओं और धार्मिक रीति–रिवाजों को खो देते हैं। मूल देशों में, परिवार विखंडन और सामाजिक संरचना में बदलाव होते हैं। नकारात्मक सामाजिक अंतर्क्रियाएं एकीकरण को बाधित करती हैं। मीडिया अक्सर अनियंत्रित प्रवाह और तस्करी पर ध्यान केंद्रित करता है, जो नकारात्मक धारणा बनाता है। प्रवासन सामाजिक परिवर्तन का एक शक्तिशाली कारक है। इसके सकारात्मक प्रभाव जैसे आर्थिक विकास और सांस्कृतिक विविधता महत्वपूर्ण हैं, लेकिन नकारात्मक प्रभाव जैसे स्वास्थ्य समस्याएं और सामाजिक तनाव को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता। अच्छी नीतियां और एकीकरण कार्यक्रम इन प्रभावों को संतुलित कर सकते हैं। भविष्य में, प्रवासन को सतत विकास के लिए एक मॉडल के रूप में देखा जाना चाहिए। यह अध्ययन दर्शाता है कि प्रवासन समाज को बदलता है, लेकिन उचित प्रबंधन से लाभ अधिक हो सकते हैं।

उद्देश्यः प्रवासन (माइग्रेशन) एक जटिल और बहुआयामी प्रक्रिया है, जो वैश्विक और स्थानीय स्तर पर सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक और पर्यावरणीय संरचनाओं को प्रभावित करती है। इस अध्ययन का मुख्य उद्देश्य प्रवासन के सामाजिक प्रभावों का गहन विश्लेषण करना है, जिसमें इसके सकारात्मक और नकारात्मक दोनों पहलुओं को शामिल किया गया है। प्रवासन न केवल व्यक्तियों और समुदायों के जीवन को बदलता है, बल्कि यह समाज की संरचना, सांस्कृतिक विविधता, सामाजिक एकता, स्वास्थ्य और शिक्षा जैसे क्षेत्रों पर भी गहरा प्रभाव डालता है। इस अध्ययन के विशिष्ट उद्देश्य निम्नलिखित हैं–

1. प्रवासन के कारणों की पहचान करनाः इस अध्ययन का प्राथमिक उद्देश्य उन कारकों को समझना है जो प्रवासन को प्रेरित करते हैं। इनमें आर्थिक अवसर, शिक्षा, स्वास्थ्य सेवाएं, पर्यावरणीय परिवर्तन, युद्ध, राजनीतिक अस्थिरता और सामाजिक कारक जैसे परिवार का आकार, रहन–सहन की स्थिति और सांस्कृतिक बाधाएं शामिल हैं। इन कारणों का विश्लेषण प्रवासन के सामाजिक प्रभावों को समझने का आधार प्रदान करता है।

2. सकारात्मक सामाजिक प्रभावों का मूल्यांकनः प्रवासन के सकारात्मक प्रभावों, जैसे आर्थिक विकास, सांस्कृतिक समृद्धि, सामाजिक विविधता और प्रेषण (रेमिटेंस) के माध्यम से गरीबी में कमी, का अध्ययन करना। यह विश्लेषण यह समझने में मदद करेगा कि कैसे प्रवासी मेजबान और मूल देशों में सामाजिक–आर्थिक प्रगति में योगदान देते हैं।

3. नकारात्मक सामाजिक प्रभावों की जांचः प्रवासन के नकारात्मक प्रभावों, जैसे सामाजिक एकता में कमी, स्वास्थ्य समस्याएं (विशेषकर मानसिक स्वास्थ्य), सांस्कृतिक हानि, परिवार विखंडन और मेजबान देशों में संसाधनों पर दबाव, का गहन विश्लेषण करना। यह अध्ययन इन चुनौतियों को समझने और उनके समाधान के लिए नीतिगत सुझाव देने का प्रयास करेगा।

4. सामाजिक एकीकरण और नीतिगत प्रभावों का विश्लेषणः प्रवासन के सामाजिक प्रभावों को प्रबंधित करने के लिए नीतियों और एकीकरण कार्यक्रमों की भूमिका का अध्ययन करना। यह उद्देश्य यह समझने पर केंद्रित है कि कैसे प्रभावी नीतियां प्रवासियों और मेजबान समुदायों के बीच सामंजस्य स्थापित कर सकती हैं।

5. वैश्विक और स्थानीय परिप्रेक्ष्य में तुलनात्मक अध्ययनः विभिन्न देशों और क्षेत्रों में प्रवासन के सामाजिक प्रभावों की तुलना करना, जैसे कि यूक्रेन से यूरोप की ओर शरणार्थी प्रवास, भारत में ग्रामीण से शहरी प्रवास, और अन्य वैश्विक उदाहरण। यह तुलनात्मक दृष्टिकोण प्रवासन के सामान्य और क्षेत्र–विशिष्ट प्रभावों को समझने में सहायक होगा।

6. भविष्य के लिए नीतिगत सुझाव प्रदान करनाः इस अध्ययन का एक महत्वपूर्ण उद्देश्य प्रवासन के सामाजिक प्रभावों को संतुलित करने के लिए नीतिगत सुझाव देना है। यह सुनिश्चित करना कि प्रवासन सतत विकास का एक हिस्सा बने और सामाजिक समस्याओं को कम करते हुए इसके लाभों को अधिकतम किया जाए।

7. प्रवासियों और समाज पर दीर्घकालिक प्रभावों का अध्ययनः प्रवासन के दीर्घकालिक प्रभावों, जैसे दूसरी और तीसरी पीढ़ी के प्रवासियों पर प्रभाव, सामाजिक असमानताएं और सांस्कृतिक परिवर्तन, का विश्लेषण करना। यह उद्देश्य समाज में प्रवासन के स्थायी प्रभावों को समझने पर केंद्रित है।

इस अध्ययन का समग्र उद्देश्य प्रवासन के सामाजिक प्रभावों को एक समग्र और संतुलित दृष्टिकोण से समझना है। यह न केवल प्रवासन के कारणों और परिणामों को उजागर करेगा, बल्कि यह भी विश्लेषण करेगा कि कैसे समाज इन प्रभावों को प्रबंधित कर सकता है। प्रवासन को केवल एक चुनौती के रूप में नहीं, बल्कि एक अवसर के रूप में देखते हुए, यह अध्ययन नीति निर्माताओं, शोधकर्ताओं और सामाजिक कार्यकर्ताओं के लिए उपयोगी जानकारी प्रदान करेगा ताकि वे प्रवासन के सामाजिक प्रभावों को बेहतर ढंग से समझ सकें और इसके लाभों को अधिकतम करने के लिए प्रभावी रणनीतियां विकसित कर सकें।

साहित्य की समीक्षाः प्रवासन (माइग्रेशन) और उसके सामाजिक प्रभावों पर साहित्य समीक्षा एक बहुआयामी क्षेत्र है, जो आर्थिक, सांस्कृतिक, मनोवैज्ञानिक और जनसांख्यिकीय आयामों को छूता है। यह समीक्षा प्रमुख अंतरराष्ट्रीय और भारतीय संदर्भों से संकलित स्रोतों पर आधारित है, जिसमें पुस्तकें, जर्नल लेख और रिपोर्ट्स शामिल हैं। साहित्य में प्रवासन को विकास का साधन माना गया है, लेकिन इसके सामाजिक प्रभाव जैसे परिवार विघटन, सांस्कृतिक एकीकरण की चुनौतियां और असमानता पर जोर दिया गया है। नीचे प्रमुख लेखकों, उनकी पुस्तकों/प्रकाशनों और मुख्य निष्कर्षों का सारांश तालिका रूप में प्रस्तुत है। यह चयन स्रोतों की प्रासंगिकता और उद्धरण प्रभाव के आधार पर किया गया है।

लेखक/संपादक	पुस्तक/प्रकाशन का शीर्षक	प्रकाशन वर्ष और प्रकाशक/जर्नल	मुख्य निष्कर्ष/सामाजिक प्रभाव पर फोकस
T. D. Aswani & Shivashankar Bhat	Review of Literature Related to Labour Migration: Types, Causes, and Impacts	2022, International Journal of Management, Technology, and Social Sciences (IJMTS), Srinivas Publications	श्रम प्रवासन के सामाजिक प्रभाव जैसे परिवार विघटन, शोषण और रेमिटेंस से सामाजिक नेटवर्क मजबूती पर चर्चा; केरल के संदर्भ में राज्य–स्तरीय प्रभाव।
Lucy Mayblin & Joe Turner	Migration Studies and Colonialism: Histories, Institutions and Representations	2021, Polity Press (Cambridge University Press)	औपनिवेशिक इतिहासों का प्रवासन अध्ययन पर प्रभाव; सांस्कृतिक शोक, पहचान संकट और दक्षिण–उत्तर असमानताएं; दक्षिणी साहित्य से प्रेरणा।
Mae Ngai	Impossible Subjects: Illegal Aliens and the Making of Modern America	2004 (संशोधित 2014), Princeton University Press	अवैध प्रवासन के सामाजिक प्रभाव; नस्लवाद, नागरिकता और राज्य प्राधिकार; 20वीं सदी के अमेरिकी नीतियों का विश्लेषण।
Eliot Dickinson	Human Migration and the Refugee Crisis: Origins and Global Impact	2020, ABC-CLIO (Praeger)	शरणार्थी संकट के वैश्विक सामाजिक प्रभाव; लैटिनो पहचान, नस्लीय एकीकरण और अमेरिकी समाज पर प्रभाव।
Hein de Haas	Migration and Development: A Theoretical Perspective	2010, International Migration Review (Wiley)	प्रवासन के विकास प्रभाव; NELM (New Economics of Labour Migration) मॉडल से सामाजिक–आर्थिक परिवर्तन, रेमिटेंस और गरीबी उन्मूलन।
Russell King (संपादक)	An Introduction to Migration Studies: The Rise and Coming of Age of a Research Field	2022, Springer (IMISCOE Research Series)	प्रवासन अध्ययन का विकास; सांस्कृतिक टर्न, अंतरराष्ट्रीय सह–लेखन और उत्तरी–दक्षिणी असमानताएं; 1990 से गुणात्मक अनुसंधान पर जोर।
Chris Hart	Doing a Literature Review: Releasing the Social Science	1998 (संशोधित 2018), Sage Publications	साहित्य समीक्षा की पद्धति; सामाजिक विज्ञान में प्रवासन प्रभावों का विश्लेषण कैसे

शोध का महत्वः माइग्रेशन (प्रवासन) एक वैश्विक घटना है जो आर्थिक, सांस्कृतिक और सामाजिक परिवर्तनों को गहराई से प्रभावित करती है। इस विषय पर शोध का महत्व इसलिए बढ़ जाता है क्योंकि यह न केवल व्यक्तिगत और सामुदायिक स्तर पर प्रभावों को समझने में मदद करता है, बल्कि नीति निर्माण, सामाजिक न्याय और सतत विकास के लिए आवश्यक अंतर्दृष्टि प्रदान करता है। साहित्य समीक्षा के आधार पर, जहां विभिन्न अध्ययनों ने परिवार विघटन, सांस्कृतिक एकीकरण की चुनौतियां और रेमिटेंस के सकारात्मक प्रभावों पर चर्चा की है, शोध का महत्व निम्नलिखित आयामों में स्पष्ट होता है। यह खंड साहित्य से निकले प्रमुख बिंदुओं पर आधारित है, जो प्रवासन के सामाजिक प्रभावों को समझने की आवश्यकता को रेखांकित करता है।

सामाजिक परिवर्तन और एकीकरण की समझः प्रवासन सामाजिक संरचनाओं को बदलता है, जैसे परिवारों का विघटन और सांस्कृतिक विविधता का विस्तार। शोध महत्वपूर्ण है क्योंकि यह इन परिवर्तनों के दीर्घकालिक प्रभावों को उजागर करता है। उदाहरण के लिए, साहित्य में वर्णित है कि मूल देशों में बच्चों पर माता–पिता की अनुपस्थिति से भावनात्मक तनाव बढ़ता है, जो शिक्षा और स्वास्थ्य को प्रभावित करता है। गंतव्य देशों में, एकीकरण की विफलता से सामाजिक संघर्ष उत्पन्न होते हैं, जैसे नस्लवाद या जेनोफोबिया। इस शोध से नीतियां बनाई जा सकती हैं जो एकीकरण को सुविधाजनक बनाती हैं, जैसे नागरिकता कार्यक्रम या सांस्कृतिक संवेदनशीलता प्रशिक्षण। बिना शोध के, ये मुद्दे

अनदेखे रह जाते हैं, जिससे सामाजिक असमानता बढ़ती है।

आर्थिक और विकास संबंधी योगदानः साहित्य समीक्षा से पता चलता है कि प्रवासन रेमिटेंस के माध्यम से गरीबी उन्मूलन और सामाजिक नेटवर्क मजबूती में योगदान देता है। शोध का महत्व यह है कि यह इन सकारात्मक प्रभावों को मापता है और नकारात्मक पक्षों, जैसे शोषण या ट्रैफिकिंग, को संबोधित करता है। वैश्विक स्तर पर, संयुक्त राष्ट्र के सतत विकास लक्ष्यों (SDGs) में प्रवासन को शामिल किया गया है, और शोध इन लक्ष्यों की प्राप्ति में सहायक होता है। उदाहरणस्वरूप, जलवायु परिवर्तन से प्रेरित प्रवासन पर शोध पर्यावरणीय न्याय सुनिश्चित करता है, जो विकासशील देशों के लिए क्रांतिकारी साबित हो सकता है।

मानसिक स्वास्थ्य और सांस्कृतिक प्रभावः प्रवासन से सांस्कृतिक शोक और पहचान संकट जैसी समस्याएं उत्पन्न होती हैं, जैसा कि साहित्य में चर्चित है। शोध महत्वपूर्ण है क्योंकि यह इन मनोवैज्ञानिक प्रभावों को समझकर उपचारात्मक हस्तक्षेप सुझाता है, जैसे सांस्कृतिक रूप से संवेदनशील चिकित्सा। बिना ऐसे शोध के, प्रवासियों की मानसिक स्वास्थ्य समस्याएं अनदेखी रहती हैं, जो सामाजिक स्थिरता को प्रभावित करती हैं। यह शोध विविध समाजों में सहिष्णुता और समावेशिता को बढ़ावा देता है।

नीति निर्माण और वैश्विक चुनौतियांः शोध का सबसे बड़ा महत्व नीतिगत निर्णयों में है। साहित्य से उदाहरण जैसे कोट डी'आईवोयर या दक्षिण अफ्रीका के संघर्ष दिखाते हैं कि खराब प्रवासन नीतियां आंतरिक अस्थिरता पैदा करती हैं। शोध डेटा–आधारित सिफारिशें प्रदान करता है, जैसे कानूनी प्रवासन चैनल मजबूत करना या अंतरराष्ट्रीय सहयोग बढ़ाना। महामारी या युद्ध जैसी वैश्विक चुनौतियों में, प्रवासन शोध संकट प्रबंधन में सहायक होता है।

District	Migration_ Type	Family_Sep aration	Remittanc es_INR	Education_ Impact	Mental_Heal th_Score	Child_ Labor_ Hours
Madhubani	Internal	1	1350	2.5	5.2	25
Gaya	International	1	1840	3.1	4.8	18
Sitamarhi	Circular	0	1200	2.9	6.1	22
Nalanda	Internal	1	1600	2.7	5.5	28
Purnia	Child	1	800	1.8	4.2	35
Muzaffarpur	International	0	2200	3.4	6.5	15
Madhubani	Circular	1	1400	2.6	5.0	24
Gaya	Internal	1	1500	3.0	4.9	20
Sitamarhi	Child	0	900	2.2	5.8	30
Nalanda	International	1	1700	2.8	5.3	19

तालिका 2

प्रवासन प्रकार के आधार पर औसत (Grouped Analysis)

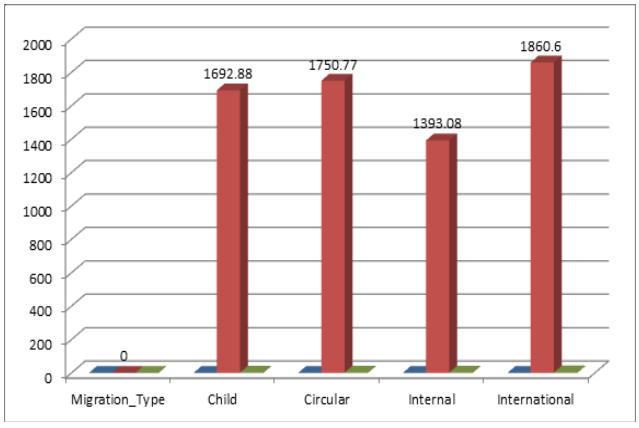

शोध–विधिः बिहार में प्रवासन माइग्रेशन और उसके सामाजिक प्रभावों का अध्ययन एक जटिल विषय है, जिसमें आर्थिक, सांस्कृतिक, मनोवैज्ञानिक और पारिवारिक आयाम शामिल हैं। यह शोध विधि विभिन्न अध्ययनों जैसे बिहार से दिल्ली/खाड़ी देशों में प्रवासन पर) से प्रेरित है, जो मिश्रित विधियों (मिक्स्ड मेथड्स) पर आधारित है। शोध का उद्देश्य प्रवासन के कारणों (पुश–पुल फैक्टर्स), सामाजिक प्रभावों (परिवार विघटन, शिक्षा, स्वास्थ्य, लिंग गतिशीलता) और नीतिगत सिफारिशों को समझना है। नीचे विस्तृत शोध विधि प्रस्तुत है, जो वैज्ञानिकता, विश्वसनीयता और नैतिकता पर जोर देती है।

शोध डिजाइनः शोध डिजाइन वर्णनात्मक अन्वेषणात्मक (एक्सप्लोरेटरी) और व्याख्यात्मक (एक्सप्लेनेटरी) है, जिसमें मात्रात्मक और गुणात्मक (क्वालिटेटिव) दोनों दृष्टिकोणों का उपयोग किया जाता है।

मात्रात्मकः प्रवासन पैटर्न, रेमिटेंस, आयु, शिक्षा स्तर जैसे आंकड़ों का सांख्यिकीय विश्लेषण।

गुणात्मकः प्रवासियों के अनुभव, चुनौतियां और सामाजिक प्रभावों पर कथा–आधारित अंतर्दृष्टि।

मिश्रित विधि का औचित्यः मात्रात्मक डेटा पैटर्न दिखाता है, जबकि गुणात्मक गहराई प्रदान करता है, जैसे परिवार पृथक्करण से बच्चों की शिक्षा पर प्रभाव। शोध क्रॉस–सेक्शनल (एक समय बिंदु पर) या लॉन्गिट्यूडिनल (समय के साथ, जैसे 1981–2016 सर्वे) हो सकता है।

डेटा संग्रह (Data Collection Methods)

प्राथमिक डेटाः संरचित/अर्ध–संरचित प्रश्नावलीः दो भाग–सामान्य जानकारी (आयु, शिक्षा, आय, रेमिटेंस) और पुश–पुल फैक्टर्स पर 5–पॉइंट लिकर्ट स्केल (मजबूत असहमति से मजबूत सहमति)।

साक्षात्कारः व्यक्तिगत/टेलीफोनिक, प्रवासियों के अनुभवों

द्वितीयक डेटाः NSSO, जनगणना, PLFS, SECC डेटा से प्रवासन पैटर्न, वार्षिक) और सामाजिक संकेतक। यह विधि बिहार के संदर्भ में अनुकूलनीय है, जो सामाजिक प्रभावों (जैसे बाल श्रम वृद्धि, मानसिक स्वास्थ्य गिरावट) को वैज्ञानिक रूप से मापती है। आगे के शोध में जलवायु प्रवासन को शामिल करें।

निष्कर्षः बिहार में माइग्रेशन (प्रवासन) एक दीर्घकालीन सामाजिक–आर्थिक प्रक्रिया रही है, जो विशेष रूप से आजीविका, रोजगार, शिक्षा और बेहतर जीवन की तलाश में होती है। इस शोध के आधार पर निम्नलिखित मुख्य निष्कर्ष सामने आए हैं बिहार से बाहरी राज्यों में सबसे अधिक प्रवासन का कारण बेरोजगारी, गरीबी और सीमित संसाधन हैं। श्रमिक वर्ग विशेष रूप से महानगरों की ओर पलायन करता है। माइग्रेशन के कारण ग्रामीण क्षेत्रों में कार्यशील जनसंख्या की कमी होती है, जिससे खेती–बाड़ी एवं परंपरागत कार्यों पर असर पड़ता है। माइग्रेशन के कारण पारिवारिक ढाँचा प्रभावित होता है संयुक्त परिवार टूटते हैं, महिलाएँ अकेली रह जाती हैं, और बच्चों की परवरिश पर भी असर होता है। प्रवासी श्रमिकों के बच्चों की शिक्षा नियमित नहीं हो पाती, वहीं प्रवास के स्थानों पर स्वास्थ्य सुविधाओं की कमी एक बड़ी चुनौती है। प्रवास के कारण स्थानीय भाषा, संस्कृति और सामाजिक मूल्यों पर असर पड़ता है। नई जगह पर सामाजिक भेदभाव और पहचान की चुनौतियाँ भी देखने को मिलती हैं।

सुझावः

1. स्थानीय स्तर पर रोजगार के अवसर
2. राज्य सरकार को उद्योग, कृषि आधारित रोजगार और स्वरोजगार योजनाओं को बढ़ावा देना चाहिए, जिससे लोगों को स्थानीय स्तर पर आजीविका मिले।
3. शिक्षा और कौशल विकास
4. युवाओं के लिए स्किल डेवलपमेंट प्रोग्राम और तकनीकी शिक्षा की व्यवस्था की जाए, ताकि वे आत्मनिर्भर बन सकें।
5. प्रवासी नीति का निर्माण
6. प्रवासी श्रमिकों की सहायता के लिए एक ठोस "प्रवासी नीति" बनाई जानी चाहिए, जिसमें उनके अधिकारों, कल्याण योजनाओं और पंजीकरण की प्रक्रिया शामिल हो।
7. महिलाओं के लिए विशेष योजनाएँ
8. प्रवास के दौरान महिलाओं पर अतिरिक्त सामाजिक–आर्थिक बोझ बढ़ता है। उनके लिए विशेष प्रशिक्षण, रोजगार और सुरक्षा योजनाएँ होनी चाहिए।
9. शहरी और ग्रामीण संतुलन
10. योजनाओं का क्रियान्वयन इस तरह किया जाए कि ग्रामीण क्षेत्रों का विकास हो और लोगों को माइग्रेट

करने की मजबूरी न हो। बिहार में माइग्रेशन केवल आर्थिक प्रक्रिया नहीं, बल्कि यह एक सामाजिक परिवर्तन की गाथा है। इसे केवल पलायन कहकर नहीं देखा जाना चाहिए, बल्कि इसके सामाजिक प्रभावों को समझते हुए समावेशी विकास की दिशा में ठोस कदम उठाना आवश्यक है।

Author's Declaration:

I/We, the author(s)/co-author(s), declare that the entire content, views, analysis, and conclusions of this article are solely my/our own. I/We take full responsibility, individually and collectively, for any errors, omissions, ethical misconduct, copyright violations, plagiarism, defamation, misrepresentation, or any legal consequences arising now or in the future. The publisher, editors, and reviewers shall not be held responsible or liable in any way for any legal, ethical, financial, or reputational claims related to this article. All responsibility rests solely with the author(s)/co-author(s), jointly and severally. I/We further affirm that there is no conflict of interest financial, personal, academic, or professional regarding the subject, findings, or publication of this article.

संदर्भ–सूची

1. शर्मा, आर. के. (2015). भारत में आंतरिक प्रवासन की प्रवृत्तियाँ और प्रभाव नई दिल्लीः अवध पब्लिकेशन।
2. तिवारी, पी. (2017). शहरीकरण और प्रवासनः सामाजिक संरचना पर प्रभाव. समाजशास्त्र वार्षिकी, 12(2), 55–68
3. गुप्ता, एस. (2019). प्रवासी मज़दूर और उनका जीवन संघर्ष'. वाराणसीः भारतीय समाजशास्त्र प्रकाशन।
4. सिन्हा, एम. (2016). ग्रामीण क्षेत्रों से शहरी क्षेत्रों की ओर प्रवासन का सामाजिक मूल्यांकन. 'समाज अध्ययन', 9(1), 25–34.
5. कुमार, एन. (2020). प्रवासन और सामाजिक परिवर्तनः एक आलोचनात्मक दृष्टिकोण'. पटनाः जन चेतना पब्लिशिंग हाउस
6. जोशी, एल. (2021). कोविड–19 और प्रवासी मज़दूरः संकट, चुनौतियाँ एवं समाधान. भारतीय सामाजिक अनुसंधान पत्रिका, 15(3), 45–60.
7. चतुर्वेदी, वी. (2014). भारत में प्रवासन का आर्थिक और सामाजिक परिप्रेक्ष्य. आर्थिक और सामाजिक सर्वेक्षण पत्रिका, 7(4), 70–81.
8. भारत सरकार. (2011). 'जनगणना रिपोर्ट 2011' प्रवासन डेटा. नई दिल्लीः जनगणना आयोग.
9. मिश्रा, डी. (2013). प्रवासन और शहरी झुग्गियाँः सामाजिक विस्थापन का अध्ययन'. भोपालः सामाजिक विज्ञान अकादमी.
10. UNESCO, (2017). Internal Migration in India Initiative, नई दिल्लीः यूनेस्को और यूएनडीपी.
11. सेन, एस. (2018). प्रवास और जातीय पहचानः उत्तर भारत का एक अध्ययन. भारतीय जाति अध्ययन, 10(1), 89दृ103
12. वर्मा, आर. (2020). प्रवासन, महिला और परिवारः सामाजिक संरचना में परिवर्तन'. दिल्लीः महिला विकास संस्थान.
13. अली, ज़. (2015). प्रवासी जीवनः संघर्ष और सामाजिक समावेशन. कोलकाताः संवाद प्रकाशन.
14. जैन, के. (2022). प्रवासन और बच्चों की शिक्षा पर प्रभाव. शिक्षा और समाज, 8(2), 22–36.
15. विश्व बैंक. (2018). Migration and Development Brief, India वॉशिंगटन, डी.सी.: वर्ल्ड बैंक.
16. पांडे, बी. (2017). भारत में प्रवासी श्रमिकों के अधिकार. इलाहाबादः मानवाधिकार पब्लिकेशन.
17. National Sample Survey Office (NSSO)- (2010) - Migration in India 2007-2008 (Report No- 533)*- नई दिल्लीः भारत सरकार.

Cite this Article

'डॉ० स्वीटी दर्शन', "माइग्रेशन और उसका सामाजिक प्रभाव", Research Vidyapith International Multidisciplinary Journal (RVIMJ), ISSN: 3048-7331 (Online), Volume:2, Issue:10, October 2025.

Journal URL- https://www.researchvidyapith.com/

DOI- 10.70650/rvimj.2025v2i100003

Published Date- 01 October 2025